

शर्करा उद्योग में मूल्यवर्द्धित उत्पादों के व्यवसाय की असीम संभावनाएं

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आजादी के अमृत महोत्सव के परिप्रेक्ष्य में आयोजित वेबिनार में मंगलवार को कहा गया कि शर्करा उद्योग में निष्प्रयोज्य सामग्री व सह-उत्पादों से बनने वाले विभिन्न मूल्यवर्द्धित उत्पादों के व्यवसाय की असीम संभावनाएं हैं। उद्यमियों को इस राह पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। संस्थान के विशेषज्ञ तकनीकी मार्गदर्शन भी करेंगे।

वेबिनार का उद्घाटन सचिव (खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण, भारत सरकार) सुधांशु पांडेय ने किया। उन्होंने कहा कि मूल्यवर्द्धित उत्पादों के लिए सूक्ष्म व लघु इकाइयां या तो चीनी कारखाने स्वयं स्थापित करें अथवा संयुक्त उद्यम के रूप में अन्य उद्यमियों के साथ मिलकर लगायें। संयुक्त सचिव (शर्करा) भारत सरकार सुबोध कुमार सिंह ने वहां एमएसएमई उपक्रमों को राष्ट्रीय शर्करा

संस्थान के साथ संयुक्त रूप से कार्य करें तथा उद्यमियों से ऐसी इकाइयों की स्थापना को आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इससे ग्रामीण क्षेत्र में समृद्धि आने के साथ ही पर्याप्त रोजगार



राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में वेबिनार में शामिल लोग।

फोटो : एखतार

भी सृजित हो सकते हैं। संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने चीनी कारखानों के सह उत्पाद अथवा अपशिष्ट पदार्थों के उपयोग से बनने वाले मूल्यवर्द्धित उत्पादों की प्रायता को लाभ पर प्रस्तुति दी। खोई के फिल्टर केक से बायोगैस बनायी जा सकती है। कम्प्रेस्ड बायोगैस भी तैयार की जा सकती है। क्रॉकरी उत्पाद भी तैयार किये जा सकते हैं। संस्थान के अचार्य प्रो.डी.स्वेन ने ब्यास (खोई) से पार्टिकल बोर्ड व ब्यालर के राख से फोटा ससृद्ध उर्वरक बनाने की जानकारी दी।

MSME institutes asked to work for creating job opportunities

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: As a part of 'Azadi Ka Amrut Mahotsav' celebrations, a national webinar on topic 'Manufacture of value-added products on micro, small and medium scale' was organized by National Sugar Institute, Kanpur on Tuesday.

The webinar was inaugurated by secretary, food and public distribution, Government of India Sudhanshu Pandey who laid emphasis on utilization of byproducts of the sugar industry-bagasse and filter cake in particular for producing value added products like disposable cutlery, particle board and biogas.

Speaking on the occasion, joint secretary (sugar), Government of India, Subodh Kumar Singh called upon the MSME institutes to work jointly with

Prof Narendra Mohan gave an exhaustive presentation on production of various value added products utilizing the byproducts or waste from sugar sector

NSI, Kanpur and the entrepreneurs for setting up such units which not only will bring prosperity in the rural areas but would also create significant job opportunities. Many products like disposable tableware, particle board and bio-gas are to be seen from environment protection point of view also, he added.

Director, National Sugar Institute, Prof Narendra Mohan gave an exhaustive presentation on production of various value added products utilizing the byproducts or waste from sugar sector:

"We can work on different models keeping in view availability of the raw material, availability of finances and end use. For example, in case of biogas from filter cake, we can have a micro model for using biogas for heating or cooking purposes in community kitchens or cluster of houses, a larger scale plant with certain modifications can produce compressed bio-methane for use in vehicles, he elaborated.

He also presented different models of production of disposable crockery from bagasse. The market for such crockery is

bound to grow as the common consumer is becoming particularly about safe and hygienic food", Prof. Mohan said.

Professor D Swain, of NSI presented details of projects for setting up units for producing particle board from bagasse and potash rich fertilizer from ash of incineration boilers. For both the products, the market is assured and with lot of new distilleries coming up raw material-incineration boiler ash is going to be available in sufficient quantities, he said.

Mahendra Kumar Yadav, junior technical officer, highlighted the importance of jaggery and novel methods developed by NSI, Kanpur for production of fortified jaggery. It requires a hygienic processing and environmental-cum-consumer friendly packing for higher shelf life and wider acceptability.

बॉयलर की राख से बनाएं पोटैश, करें कमाई

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) के राष्ट्रीय वेबिनार में सूक्ष्म और लघु उद्यम इकाइयों को सुझाव दिया गया कि वे अधिक मुनाफे के लिए डिस्टलरी(भट्टी) के इन्सिनरेशन बॉयलर की राख से पोटैश बनाएं। अभी पोटैश का शत-प्रतिशत आयात किया जा रहा है। सूक्ष्म और लघु इकाइयां खुद चीनी मिल लगा सकती हैं या फिर संयुक्त उद्यम के रूप में अन्य उद्यमियों के साथ मिलकर काम शुरू कर सकती हैं। इसमें स्टार्ट अप के खूब अवसर हैं।

एनएसआई में आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के द्वारा शर्करा उद्योग के सह उत्पादों एवं निष्प्रयोज्य सामग्री का मूल्यवर्धित उत्पाद के लिए उपयोग विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का उद्घाटन केंद्रीय सचिव

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सुधांशु पांडेय ने किया। उन्होंने कहा कि चीनी कारखानों से निकले सह उत्पाद जैसे बगस और फिल्टर केक से डिस्पोजेबल क्राकरी, पार्टिकल बोर्ड और बायो गैस जैसे मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं।

संयुक्त सचिव शर्करा सुबोध कुमार सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार ने एमएसएमई उपक्रमों को एनएसआई के साथ मिलकर ऐसी इकाइयों की स्थापना के लिए कहा है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि लाई जा सके। इससे रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। एनएसआई के निदेशक नरेंद्र मोहन ने मूल्यवर्धित उत्पादों के संबंध में प्रेजेंटेशन दिया। इसमें विभिन्न उत्पादों के मॉडल प्रस्तुत किए।

शर्करा अभियांत्रिकी के प्रोफेसर डी स्वेन ने परियोजनाओं और इनके बाजार का विवरण प्रस्तुत किया।

सह उत्पाद छोटे उद्योग के रूप में होंगे विकसित

कानपुर। चीनी मिल से तैयार सह-उत्पाद को एमएसएमई छोटे उद्योग के रूप में विकसित करेगा। एमएसएमई को प्रशिक्षण राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के वैज्ञानिक देंगे। यह बात खाद्य एवं सार्वजनिक मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव सुधांशु पांडेय ने कही।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के एक वेबिनार का आयोजन किया गया। इसका विषय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के द्वारा शर्करा उद्योग के सह उत्पादों एवं निष्प्रयोज्य सामग्री का मूल्यवर्धित उत्पाद हेतु उपयोग रहा। सुधांशु पांडेय ने गन्ने की खोई व फिल्टर केक से डिस्पोजल क्राकरी, पार्टिकल बोर्ड, बायोगैस जैसे मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने पर जोर दिया। संयुक्त सचिव सुबोध कुमार सिंह ने देश के एमएसएमई उपक्रमों को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के साथ जुड़कर उद्योग बढ़ाने के प्रति प्रेरित किया।

चीनी कारखानों को स्थापित करने से ग्रामीण क्षेत्रों का विकास

चीनी कारखानों से निकले वेस्ट से सह-उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं

► रसोई में खाना बनाने के लिए है उपयोगी हो सकता है बायो-गैस मॉडल, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के वेबिनार में अहम जानकारी दी गई

श्रीदीएलएन

कानपुर। सोमवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वाधान में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के द्वारा शर्करा उद्योग के सह-उत्पादों एवं निष्प्रयोज्य सामग्री का मूल्यवर्धित उत्पाद हेतु उपयोगी विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार का उद्घाटन भारत सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण के सचिव सुधांशु पाण्डेय के द्वारा किया गया।

चीनी कारखानों से निकले वेस्ट से तैयार किए जा सकते हैं कई मूल्यवर्धित उत्पाद

सचिव सुधांशु पाण्डेय ने वेबिनार में चीनी कारखानों से निकले सह-उत्पाद जैसे बगास (गन्ने की खोई) और फिल्टर केक से डिस्पोजिबल क्रांफरी, पार्टिकल बोर्ड एवं बायो-गैस जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों को तैयार किये जाने पर विशेष जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बॉयलर से निकले अपशिष्ट (बॉयलर की राशि) को पोटाश समृद्ध उर्वरक बनाने के कारखानों में उपयोग किया जाना चाहिए जो वर्तमान में एक 100 परसेंट आयातित



उत्पाद हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए सूक्ष्म और लघु इकाइयों या तो चीनी कारखाने स्वयं स्थापित करें या अन्य उद्यमियों के साथ मिलकर लगाएं।

चीनी कारखानों को स्थापित करने से ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि आएगी

इस अवसर पर संयुक्त सचिव (शर्करा) सुबोध कुमार सिंह ने कहा कि जो भी एमएसएमई के उपक्रम हैं उनको राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के साथ संयुक्त रूप से कार्य करना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उद्यमियों की ज्यादा से ज्यादा इकाइयों की स्थापना होनी चाहिए जिससे न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि लायी जाए बल्कि ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर भी उत्पन्न हो सके। उन्होंने डिस्पोजिबल क्रांफरी, पार्टिकल बोर्ड और बायो-गैस को पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बताया।



नवीन तकनीक से गुड़ तैयार करें

इसके साथ ही वेबिनार कार्यक्रम में शर्करा अभियांत्रिकी के आचार्य प्रो. डी. स्वेन ने बगास (खोई) से पार्टिकल बोर्ड और इन्सुलेशन बॉयलर के राशि से पोटाश -समृद्ध उर्वरक बनाने के संबंध में परियोजनाओं के लिए विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि इन दोनों उत्पादों का एक सुनिश्चित बाजार है और दिन प्रतिदिन स्थापित हो रहे डिस्ट्रिक्टों को देखते हुये कच्चे माल की आपूर्ति के संदर्भ में आश्चर्य हुआ जा सकता है कि इन्सुलेशन बॉयलर के राशि की आपूर्ति पर्याप्त रूप से हो सकेगी। इसके अलावा संस्थान के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी महेंद्र कुमार यादव ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के द्वारा नवीन तकनीकों से तैयार गुड़ के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस वेबिनार में शर्करा उद्योग, आसरायियों और एमएसएमई से जुड़ी बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

रत्न एरिया के लिए बायोगैस मॉडल उपयोगी

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने चीनी कारखानों के सह-उत्पादों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि हम कच्चे माल, विसर्जित की उपलब्धता और उपभोग को ध्यान में रखते हुये इस प्रकार के उत्पादों के लिए कई मॉडल विकसित कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप फिल्टर-केक से बायो-गैस के लिए हम एक लघु मॉडल तैयार कर सकते हैं जो सामूहिक रसोई अथवा कई घरों में खाना बनाने के लिए उपयोग में लाया जा सकता है, वहीं यदि इसमें आवश्यक परिवर्तन लाया जाए तो यह वृहद पैमाने पर कम्प्रेस्ड बायो-मिथेन तैयार करने के काम आ सकता है जिसे वाहनों में भी प्रयोग किया जा सकता है। इस अवसर पर उन्होंने बगास से डिस्पोजिबल क्रांफरी बनाने के विभिन्न मॉडल भी प्रस्तुत किए और कहा कि इस तरह के क्रांफरी के बाजार के विकसित होने की प्रबल संभावना है; क्योंकि सामान्य उपभोक्ताओं में सुरक्षित और स्वच्छ भोजन के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो चुकी है।

की अनुदान योजना में 2230 त रहे आवेदन हुए हैं। कुल 6990 वहां आवेदनों की जांच चल रही है।

चाले नसीब त प्रेत, क्लि में वार में गुलाब ई नगर

शाह

लाभ आरोवार करण, से

गौराहा

कानपुर की तुरन्त योग्यता 80006

2005

मीडिएट व बीए

द्वितीय

तीय वर्ष

सी चारो

कमशरू

10409

ईटी वर्ष

01076

क्रमांक

व प्रमाण

एनएसआई में शर्करा उद्योग के सह उत्पादों पर वेबिनार



प्रो. नरेन्द्र मोहन व अन्य।

कानपुर, 17 मार्च। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वाधान में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के द्वारा शर्करा उद्योग के सह उत्पादों एवं निष्प्रयोज्य सामग्री का मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु उपयोग विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का उद्घाटन सचिव सुधांशु कुमार ने किया। उन्होंने चीनी कारखानों से निकले सह-उत्पाद जैसे बगास और फिल्टर केक से डिस्पोजिबल क्रांफरी, पार्टिकल बोर्ड एवं बायो गैस जैसे मूल्य वर्धित उत्पादों को तैयार किये जाने पर बदल दिया। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने चीनी कारखानों के सह उत्पाद अथवा अपशिष्ट पदार्थों के उपयोग से मूल्य वर्धित उत्पादों की प्राप्यता पर एक प्रस्तुति दी। इस दौरान प्रो. डी. स्वेन आदि ने अपने विचार रखे।

नील माह मा अतिरि माह म कार्यक्रम तिथियों अतिरि मार्च-2 वाराणस अतिरि मार्च-21 इज्जतन नीलामी प्रकाशित नीलामी www. सुचना www.n देखा ज पुजाधि/ या मो. न ट्रेनि

श वि कर् द ले इ